ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-11* February- 2019
Anthology : The Research

जायसी की समन्वय भावना

प्रीति राठौर
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग
डी0बी0एस0 कालेज,
कानपुर

सारांश

मलिक मोहम्मद जायसी हिन्दी के ऐसे कवि हैं, जिन्होंने अपने काव्य में विविध रूपों में समन्वयात्मक दृष्टिकोण का आश्रय लिया है। जायसी एक समाजवादी कवि थे। पद्मावत में यह समन्वय विविध रूपों में दिखाई देता है। यथा– दार्शनिक समन्वय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय। यद्यपि यह समन्वय भाषा एवं प्रेम के विविध रूपों में भी दिखाई देता है, परन्तु तत्कालीन सामाजिक स्थिति को देखते हुये धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक समन्वय का बड़ा महत्व है। क्योंकि उस समय की विकृत सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिये हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रयास करना आवश्यक था। यही भावना हमें जायसी के काव्य में दिखाई देती है। अतः जायसी के काव्य में उक्त समन्वय की भावना पर यहाँ विचार किया गया है।

मुख्य शब्द : परमतत्त्व, समन्वयात्मक, अद्वैतवाद, सर्ववाद, इश्क मजाजी, इश्क हकीकी, ब्रह्मरंध्र, नवखण्ड, सांस्कृतिक, शरीयत, आलम्बन, सम्प्रदाय, विध्वंस, मलेच्छ, अध्यात्म, श्रृंगार, आकर्षित, समन्वय।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में जायसी एक ऐसे कवि हैं, जिन्होंने काव्य में लोक संवेदना को स्वर दिया है। जायसी एक समन्वयवादी कवि थे। उनके पद्मावत की सबसे बड़ी विशेषता उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है। उनके पद्मावत में समन्वय भावना विभिन्न रूपों में दिखाई देती है, जिनमें से सामाजिक कल्याण एवं एकता की भावना को जाग्रत करने वाली समन्वयात्मक दृष्टिकोण मिलता है। सामाजिक एकता की भावना पर आधारित समन्वयात्मक रूप पद्मावत में हमें निम्न रूपों में दिखाई देता हैः–

दार्शनिक समन्वय

दार्शनिक क्षेत्र में जायसी के पद्मावत में अनेक भारतीय एवं अभारतीय तत्वों का समन्वय हुआ है। जायसी की रहस्य भावना अद्वैतवाद से प्रभावित है। अद्वैतवाद में दो प्रकार के द्वैत का परित्याग होता है :– आत्मा एवं परमात्मा के द्वैतभाव का एवं ब्रह्म और जड़ जगत के द्वैत भाव का। इनमें से जायसी ने आत्मा एवं परमात्मा के अद्वैतभाव की ओर अधिक ध्यान दिया है। आत्मा और परमात्मा की एकता एवं ब्रह्म और जगत की एकता – इन दोनों का मिला–जुला रूप सर्ववाद है, जो 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' इस रूप में व्यक्त किया जाता है। गीता के दशम् अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने इसी सर्ववाद के अनुसार अपनी महत्ता प्रतिपादित की है। इसी सर्ववाद से प्रभावित होकर जायसी ने भी समस्त विभूतियों में परमतत्व की सत्ता अनुभव की है :–

''रवि ससि नखत दिपहि ओही जोती,
रतन पदारथ मानिक मोती।
जहँ जहँ विहँसि सुभावहि हँसी,
वहँ तहँ छिटकि जोति परगसी।।''[1]

भारतीय अद्वैतवाद तथा सर्ववाद पर आधारित जायसी के रहस्यवाद में जिस प्रेमतत्व का समावेश है, वह निस्सन्देह अभारतीय है। सूफी परमात्मा को प्रियतम कहते हैं। परमात्मा ही उनका प्रिय माशूक है। वे मानवीय प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम तक पहुँचाने की सीढ़ी मानते हैं। सूफी मत में इश्क मजाजी, इश्क हकीकी की सीढ़ी हैं, जिससे इन्सान खुदी को

मिटाकर खुदा बन जाता है। सूफी साधकों के जीवन का चरम लक्ष्य सृष्टि के कण–कण में उसी प्रियतम का जलवा देखना और उसके विरह में तड़प का आनन्द उठाना है। जायसी ने सूफी मत के अनुसार ही लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। सूफी मत के अनुसार ही उन्होंने परमात्मा को प्रियतमा के रूप में और जीव को प्रेमी के रूप में चित्रित किया है, जो भारतीयता से अलग है।

पद्मावत पर एक ओर भारतीय हठयोगियों की योग साधना का प्रभाव दिखाई देता है, तो दूसरी ओर सूफी धर्म के अभारतीय सिद्धान्तों की छाप भी लक्षित होती है। सिंहल द्वीप का वर्णन करते हुये जायसी कहते हैं :–

नवौ खण्ड नव पौरी, औ तहँ वज्र के पार।
चारि बसेरे जो चढ़े, सत सौ उतरे पार।

यहाँ हठयोग साधना के अनुसार ''नव पौरी'' नाक, कान, मुँह आदि नव द्वार हैं और दशम द्वार ब्रह्मरंध्र है। इसके साथ ही सूफी मत के अनुसार साधक की चार अवस्थाओं – शरीयत, तरीकत, मारिफत और हकीकत का वर्णन भी यहाँ चार बसेरों के रूप में किया गया है।

पद्मावत के आरम्भ में सृष्टि का वर्णन भी भारतीय एवं अभारतीय दोनों तत्वों का सम्मिश्रण है। एक ओर पुराणों के अनुसार सात द्वीप एवं नवखण्ड को स्थान दिया गया है तो दूसरी ओर मुसलमानों के विश्वास के अनुकूल नूर की उत्पत्ति का वर्णन है। इस्लाम के मतानुसार जायसी ने कहा है कि ईश्वर ने पहले नूर (पैगम्बर) को उत्पन्न किया तत्पश्चात् उसकी खातिर ही स्वर्ग एवं पृथ्वी की रचना की –

''कीन्हेस प्रथम जोती परगासू,
कीन्हेसि तेहि पिरीत कविलासू''

उपनिषदों में प्रतिपादित पाँच महाभूतों के विषय में जायसी चार ही महाभूत मानते हैं :–

पवन होइ भा पानी, पानी होई भइ आगि।
आगी होइ भइ माटी, गोरखधन्धे लागि।।

शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित होकर भी जायसी ने शैतान की कल्पना सूफी सिद्धान्तों के अनुसार की है। शंकराचार्य के मत में माया – आत्मा परमात्मा के मिलन में बाधक है, पर सूफी मत में शैतान बन्दे और खुदा के मिलन में बाधा पहुँचाता है। पद्मावत में राघव चेतन के रूप में शैतान की कल्पना भी मुसलमानी विश्वास के अनुरूप है।

आलम्बन के रूप में जायसी ने ब्रह्म के निर्गुण निराकार रूप को लिया है। पद्मावत के स्तुतिखण्ड में उन्होंने ईश्वर के निर्गुण रूप की ही वन्दना की है। किन्तु उन्होंने ब्रह्म की उपासना उसके सगुण रूप के अन्तर्गत आने वाले सांसारिक संबंधों के द्वारा की है। इस प्रकार जायसी ने निर्गुण एवं सगुण दोनों स्वरूपों में सामंजस्य किया है।

धार्मिक समन्वय

तत्कालीन समाज में हिन्दुओं के मुख्य तीन धार्मिक सम्प्रदाय प्रधान रूप से प्रचलित थे – वैष्णव, शैव और शक्ति। इसके अतिरिक्त बौद्ध एवं सनातनी धर्म के अनुयायी भी थे। इन सभी के मतों में परस्पर परम विरोध था। वैष्णवों का शैव सम्प्रदाय से, शैवों का शाक्त सम्प्रदाय से, बौद्धों का कर्मकाण्डियों से परम विरोध था। तांत्रिक शक्ति की पूजा करते थे तथा माँस भक्षण, सुरापान एवं व्यभिचार को साधना रूप में स्वीकार करते थे। हिन्दू मूर्तिपूजक थे, किन्तु मुसलमान मूर्तिपूजा के विरोधी थे और एक खुदा पर विश्वास करते थे। मूर्तिपूजा के विरुद्ध होने के कारण मुसलमान शासकों ने मंदिरों का विध्वंस करना प्रारम्भ कर दिया था। महमूद गजनवी जैसे आक्रमणकारियों ने भी जिनका उद्देश्य धन लूटना था, वहाँ की मूर्तियों को तोड़ा था। महमूद गजनवी से सोमनाथ मंदिर के पुजारी ने कहा, मूर्ति मत तोड़िये बदले में जितना धन चाहे ले लीजिये तो महमूद गजनवी ने कहा कि मैं मूर्तियाँ बेचता नहीं, तोड़ता हूँ :–

अथ, ''वीर! गृहीतमखिलं वित्तम्, पराजिता आर्यसेनाः, बन्दीकृता वयम्, स\चितममलं यशः इतोऽपि न शाम्यति ते क्रोधश्चेदस्मांस्ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्त्तव्य, ज्वलय, किन्तु त्यजेदिमार्मकि\चत्करी जडां महादेव प्रतिमाम् यद्येवं न स्वीकरोषि तद् गृहणास्मत्तोऽन्यदपि सुवर्णकोटिद्वयम्, त्रायस्व, मैत्रां भगवन्मूर्ति, इति साम्रेड कथयत्सु, रुदत्सु, पतत्सु, विलुण्ठत्सु, च पूजकवर्गेषु, नाहं मूर्तीविक्रीणामि किन्तु भिनद्यि इति संगर्ज्य, जनमाया हाहाकारकलकलमाकर्णयन् धोरगदया मूर्तिमतत्रुटम्।''[5]

केवल मुसलमान ही हिन्दू धर्म का विरोध करते थे, हिन्दुओं ने भी उन्हें निम्न श्रेणी का समझा एवं उनके धर्म का विरोध किया। ब्राह्मण मलेच्छ समझकर उन्हें छूना भी पाप समझते थे। जायसी ने पद्मावत के माध्यम से इस धार्मिक संघर्ष को दूर करने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने भारतीय लोक कथा एवं जन भाषा अवधी को अपने काव्य का माध्यम बनाया। उन्होंने दाम्पत्य प्रेम को अध्यात्म का प्रतीक मानकर उसके माध्यम से विश्व प्रेम का संदेश दिया। जायसी ने हिन्दुओं को उच्च स्थान दिया और उन्हीं को अपने काव्य में नायक–नायिका का पद दिया। उन्होंने नायक को जीव एवं नायिका को ब्रह्म का प्रतीक मानकर अपने भावों की अभिव्यक्ति की। हिन्दुओं के सम्मुख मुसलमानों को शैतान के रूप में चित्रित किया। यथा – अलाउद्दीन को माया का प्रतीक माना।

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-11* February- 2019
Anthology : The Research

यद्यपि मुस्लिम समाज मूर्तिपूजा का विरोधी था, परन्तु जायसी ने मूर्ति पूजा के प्रति अपना झुकाव प्रस्तुत किया। उनके पद्मावत में रत्नसेन सिंहद्वीप पहुँचने पर मन्दिर के द्वार पर बैठकर अपनी उपासना द्वारा देव को मनाता है। वसंत पूजा के अवसर पर पद्मावती अपनी सहेलियों के साथ देव की पूजा करने जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जायसी ने ईश्वर प्रेम का शुद्ध स्वरूप चित्रित करते हुये हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म का समन्वय करने का प्रयास किया।

सांस्कृतिक समन्वय

धार्मिक परिस्थितियों की भाँति तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक स्थिति भी संघर्षपूर्ण थी। प्राचीनकाल में भारतीय कला एवं संस्कृति के परिचायक अनेक मन्दिर एवं गुफाओं का निर्माण हुआ, जो इस काल में मुस्लिम आक्रमणकारियों के क्रोध का शिकार होकर नष्ट हो गयी। प्राचीन सभ्यता के कई सर्वश्रेष्ठ स्तम्भ मुसलमानों के प्रारम्भिक आक्रमणों में ही समाप्त हो गये। इस प्रकार मुस्लिम संस्कृति ने तलवार के प्रहार से भारतीय संस्कृति की अक्षुण्ण धारा को काटने का प्रयास किया, यद्यपि इसमें वे पूर्णतया सफल न हो सके। जायसी ने इस तथ्य को समझकर अपने पद्मावत में भारतीय आचार विचार एवं संस्कृति को अपनाया। उसमें अनेकों सजीव चित्र प्रस्तुत किये। जैसे नागमती एवं पद्मावती का सती होना भारतीय संस्कृति का लक्षण है। रतनसेन की मृत्यु के पश्चात् उसकी दोनों रानियाँ – पद्मावती एवं नागमती श्रृंगार करके गाजे बाजे के साथ सती हो जाती है :–

जियत कंत! तुम हम्ह गर लाई,
भुये कंठ नहिं छोड़हिं साईं।।
लागी कंठ आगि देई होरी,
छार भई जरि अंग न मोरी।।[6]

निष्कर्ष

वास्तव में जायसी का साहित्य अपने युग का सांस्कृतिक इतिहास प्रस्तुत करने में पूर्णतया सक्षम रहा है। जिस प्रकार बाण के हर्षचरित में सातवीं शताब्दी को भारतवर्ष का समृद्ध रूप देखने को मिलता है, उसी प्रकार सोलहवीं शताब्दी की भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप हमें पद्मावत में उपलब्ध होता है। चूँकि पद्मावत का आधार सूफी सिद्धान्त है, जो कि मूलतः इस्लाम धर्म पर आधारित है। अतः 'पद्मावत' की रोचक कथा एवं प्रतिमानों से आकर्षित जनता स्वतः ही मुस्लिम धर्म की ओर आकर्षित हुयी एवं उसमें स्थित सद्विचारों को आत्मसात् किया। इस प्रकार जायसी हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति में समन्वय स्थापित करने मं पूर्णतया सफल हुए हैं।

इस प्रकार जायसी के काव्य में भारतीय कवियों की भाषा शैली एवं सिद्धान्तों के साथ–साथ फारसी काव्य से संबंध रखने वाले इस्लाम के तत्वों को भी स्थान मिला है। जायसी ने सम्प्रदाय के संकुचित घेरे में बँधकर अपने मानवीय मूल्यों एवं भावनाओं को कहीं भी दबाने का प्रयास नहीं किया है। वस्तुतः समन्वय विधान के क्षेत्र में जायसी का नाम अद्वितीय है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिन्दी साहित्य का इतिहास (सम्पा0 डॉ0 नगेन्द्र) प्रथम संस्करण, पृ0–155*
2. *वही, पृ0 – 148–49*
3. *हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ0 – 759–60*
4. *पद्मावत : नव मूल्यांकन, पृ0 – 40–41*
5. *शिवराज विजय – अम्बिका दत्त व्यास रचित – प्रथम सर्ग*
6. *पद्मावत – नागमती सती खण्ड*